Vol. 4, No. 1 (January 2015) p. 58-62 Sangeet Galaxy
ISSN: 2319-9695

देशी संगीत और विदेशी श्रोता

आचार्य गिरीश चन्द्र श्रीवास्तव
अवकाश प्राप्त रीडर
संगीत एवं मंच कला विभाग,
इलाहाबाद विश्वविद्यालय,
इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश
E mail: arohi629@gmail.com

अधिकतर संगीत–प्रेमियों की मानसिकता होती है, कि वे अपने संगीत को ही सर्वश्रेष्ठ मानते हैं। उसी को सुनते और आनन्दित होते हैं। अन्य संगीत को सुनना ही नहीं चाहते। प्रायः देखा गया है कि जब भी आकाशवाणी या दूरदर्शन से अन्य प्रदेश के संगीत का प्रसारण प्रारम्भ होता है, तो वे अपना सेट तुरन्त बन्द कर देते हैं। उनका तर्क होता है कि वह संगीत उनकी समझ में तो आएगा ही नहीं, फिर क्यों समय नष्ट किया जाय। उनमें इतना भी धैर्य या उत्सुकता नहीं होती कि देखें कि वे क्या गाते–बजाते हैं। ऐसी संकीर्ण मानसिकता क्यों ? फिर भी उनकी इच्छा होती है कि उनके संगीत को सभी सुनें और सराहें।

देश में भारतीय संगीत के विदेशी श्रोता

भारत के महानगरों जैसे दिल्ली, कोलकाता, मुम्बई, चेन्नई आदि के पश्चात सर्वाधिक विदेशी पर्यटक उत्तरप्रदेश के वाराणसी नगर में आते हैं। वे सर्दियों में वहाँ तीन–चार माह रहते हैं और भारतीय धर्म, संस्कृति, संगीत आदि के विषय में जानकारी प्राप्त करते हैं। संगीत में वे अधिकतर तबला या सितार तथा यदा–कदा सारंगी या बांसुरी भी सीखते हैं। अब तो यह वाराणसी नगर के संगीत–जीवियों के लिए एक उपयोगी व्यवसाय बन गया है। नगर में डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद घाट, अस्सी घाट या फिर तुलसी घाट हो, या ध्रुपद मेला, हनुमान जयन्ती या कोई अन्य संगीत समारोह हो, ये विदेशी पर्यटक बड़ी संख्या में दिखलाई पड़तें है। वे अनुशासित होकर धैर्यपूर्वक पूरे समय तक बैठे रहते हैं। यह हम मानकर चलते हैं कि उनमें अधिकतर हमारे संगीत की बारीकियाँ और शास्त्र को नहीं समझते, फिर भी ऐसे आयोजनों में उनकी भागीदारी, संगीत के प्रति उनके आकर्षण व लगाव की पुष्टि तो करती ही है। इस प्रक्रिया में वे अन्जाने में ही भारतीय संगीत के अच्छे श्रोता बन जाते हैं।

सुदूर भारत में भारतीय संगीत और उसके श्रोता

किसी नवीन संस्कृति, भाषा, संगीत, बोल–चाल, पहनावा–ओढ़ावा वाले देश में सांगीतिक घुसपैठ के लिए संगीत के उस श्लोक को स्मरण करना होगा– गीतं वाद्यं तथा नृत्यं त्रयं संगीतमुच्यते। इस श्लोक में बाद में आये नृत्य को पहले कर देना चाहिए क्योंकि संगीत की नृत्य विधा, जो मूलतः दृश्यकला है, उसमें सर्वसाधारण को अतिशीघ्र आकर्षित करने की अद्‌भुत क्षमता निहित है। बीते दिनों में महान नर्तक रामगोपाल और नर्तक उदय शंकर ने नृत्य के इस जादुई प्रभाव को जान लिया था। बीसवीं सदी के प्रारम्भिक वर्षों में अपनी–अपनी नृत्य मण्डलियों के साथ इन कलाकारों ने यूरोप के विभिन्न देशों तथा अमेरिका का दौरा किया। इसमें इनको आशातीत सफलता मिली। इन नृत्य मण्डलियों

के साथ एक बड़ा वाद्यवृन्द (Orchestra) भी हुआ करता था। जिसके माध्यम से सुदूर बैठे लोगों ने भारतीय वाद्यों को देखा और उसके प्रभाव का अनुभव किया।

यह तो बीते दिनों की बात हुई। पिछले पाँच दशकों में न जाने कितने छोटे–बड़े भारतीय कलाकार अमेरिका और यूरोप के विभिन्न देशों में आते–जाते रहे हैं। वरिष्ठ संगीतज्ञों में उस्ताद अली अकबर खाँ, उस्ताद अल्ला रक्खा, पं0 सपन चौधरी, उस्ताद ज़ाकिर हुसैन, भारत रत्न पं0 रवि शंकर का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। ये तो सिर्फ़ कुछ बड़े नाम हैं। उ0 अली अकबर खाँ, उ0 ज़ाकिर हुसैन, पं0 सपन चौधरी आदि ने तो अमेरिका की नागरिकता ही ले ली है। अमेरिका में उस्ताद अली अकबर खाँ ने 'अली अकबर स्कूल ऑफ म्यूज़िक' की स्थापना करके तथा उस बैनर तले सैकड़ों अमेरिकियों को भारतीय संगीत की शिक्षा देकर संगीत की अतुलनीय सेवा की है। यह कहना अनुचित न होगा कि खाँ साहब ने अमेरिका में सैकड़ों कानसेन तो पैदा कर ही दिए हैं। ज़ाकिर साहब के तबला–वादन का भारत जैसा जादू अमेरिका में भी है। उल्लेखनीय है कि भारत रत्न पं0 रवि शंकर ने अपने जीवन के अन्तिम अनेक वर्ष अमेरिका में ही बिताए। 50–60 के दशक में बिटिल्स बन्धुओं ने जब पंडित जी की शिष्यता स्वीकार की तो उनको अपार ख़्याति मिली। परन्तु उसके बाद अमेरिका के आम संगीत प्रेमियों में उनकी चर्चा कम ही होती है। इन संगीतज्ञों ने विदेशों में भारतीय संगीत के अनेक श्रोता बना दिए हैं। पश्चिम के देशों में कण्ठ–संगीत के कम ही चहेते हैं। इसमें सबसे बड़ी बाधा भाषा की है। भारतीय भाषा इनके पल्ले नहीं पड़ती, अतः वे भारतीय कण्ठ संगीत को नहीं समझ पाते। इसीलिए अभी तक उसके श्रोता अधिक नहीं बन पाए हैं।

देशी संगीत के विदेशी श्रोता और भारतीय सांस्कृतिक सम्बद्ध परिषद

भारत सरकार के प्रतिष्ठित संस्थान 'भारतीय सांस्कृतिक सम्बद्ध परिषद' (Indian Council for Cultural Relations) अपने छोटे नाम I.C.C.R. से अधिक चर्चित है। यह देश–विदेश में भारतीय संगीत के प्रचार–प्रसार और श्रोताओं को तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती चली आ रही है। परिषद के नियम, उद्देश्य और उसकी गतिविधियों पर चर्चा करने से पूर्व उसके संस्थापक (Founder) के विषय में संक्षिप्त चर्चा करना आवश्यक है–

'भारतीय सांस्कृतिक सम्बद्ध परिषद' की परिकल्पना स्वतन्त्र भारत के प्रथम शिक्षा मन्त्री 'मौलाना अबुल कलाम आज़ाद' (जन्म नवम्बर 1888, निधन 22 फरवरी 1958) की देन है। मौलाना एक महान शिक्षाविद, राष्ट्रवादी नेता, शायर और शिक्षा के सभी स्तर में सुधार के लिए अनेक महत्वपूर्ण योजनाएं बनाने वाले मनीषी थे। इतना ही नहीं आपने साहित्य अकादमी, संगीत नाटक अकादमी, ललित कला अकादमी जैसे प्रतिष्ठानों को भी जन्म दिया। भारत के प्रथम प्रधानमन्त्री पं0 जवाहर लाल नेहरू आपके बड़े प्रशंसक थे। मौलाना अबुल कलाम आज़ाद को देश की उल्लेखनीय सेवाओं के लिए मरणोपरान्त सन् 1992 में देश का सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'भारत रत्न' से सम्मानित किया गया।

परिषद के उद्देश्य और गतिविधियाँ

1. विश्व के देशों में सांस्कृतिक सम्बन्ध को सुदृढ़ करना।
2. भारत का अन्य देशों से सांस्कृतिक सम्बन्ध स्थापित करना।
3. विश्व के अन्य देशों से सांस्कृतिक आदान–प्रदान को बढ़ावा देना।
4. राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर समय–समय पर सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन करना।

'भारतीय सांस्कृतिक सम्बन्ध परिषद' की ओर से विश्व के 24 विभिन्न देशों में सांस्कृतिक केन्द्र (Cultural centre) कार्यरत हैं। परिषद इन देशों में संगीत और कला के विशेषज्ञों के रूप में तीन वर्ष

के लिए अध्यापक भेजते हैं। वे वहाँ के राजदूत या हाई कमीश्नर के आधीन सेवा करते हैं। उनका मुख्य कार्य दूतावास में रहने वाले भारतीय बच्चों या युवाओं को भारतीय संस्कृति से परिचय कराना है। साथ–साथ वे उस देश के स्थानीय नागरिकों को भी संगीत, कला और संस्कृति की शिक्षा देते हैं। इस प्रकार कलाकारों के माध्यम से विदेशों में संगीत के प्रचार के साथ श्रोताओं की भी वृद्धि हो जाती है।

परिषद समय–समय पर विश्व के अनेक देशों से सांस्कृतिक शिष्ट मण्डलों को अपने देश में आमन्त्रित करती है और उनका देश के विभिन्न नगरों में कार्यक्रम आयोजित कराती है। इसी प्रकार की प्रक्रिया अपने देश में भी होती है और यहाँ की शिष्ट मण्डली अन्य देशों में जाती है। वहाँ उनका कार्यक्रम आयोजित होता है और विदेश के लोग भारतीय संगीत और कला से परिचित होते हैं। इस प्रकार देशी संगीत के विदेशी श्रोता तैयार हो जाते हैं।

यूरोपीय देशों में देशी संगीत के विदेशी श्रोता और भारतीय विद्या भवन की लन्दन शाखा की भूमिका

हमारे संगीत मनीषियों ने बहुत पहले ही जान लिया था कि यूरोप के देशों में भारतीय संगीत के प्रचार–प्रसार की बहुत सम्भावना है। अतः कुछ बड़े संगीतज्ञों ने वहाँ के देशों में अपना भाग्य आजमाया। इसमें उनको बड़ी सफलता मिली और भविष्य में अन्य संगीतज्ञों के लिए भी दरवाज़ा खुल गया। अब तो यूरोप के विभिन्न देशों में भारतीय मूल के बहुत लोग बस गए हैं तथा वहाँ की नागरिकता भी ले ली है। यूरोप के अधिकतर देश बहुत छोटे–छोटे हैं और उनकी कुल संख्या लगभग 50 है और 6–7 देश अभी विवादों में हैं। यूरोप के मुख्य देशों में फ्रांस, हॉलैण्ड, जर्मनी, स्वीटज़रलैण्ड, आस्ट्रिया, ग्रीस, साइप्रस आदि मुख्य हैं। इन देशों में इंग्लैण्ड एक महत्वपूर्ण देश है। उल्लेखनीय है कि यह देश सदा स्वतन्त्र रहा है, अतः वहाँ राष्ट्रगान और स्वतन्त्रता दिवस जैसा कुछ भी नहीं है। यूरोप में होते हुए भी यहाँ की मुद्रा पौण्ड है, जबकि अन्य सभी देशों में यूरो का चलन है। इंग्लैण्ड की राजधानी लन्दन के अतिरिक्त महत्वपूर्ण नगरों में बर्मिंघम, लेस्टर, लीड्स, लीवरपूल, मेन्चेस्टर आदि हैं। लन्दन में कई भारतीय संगीतज्ञ स्थाई रूप से रह रहे हैं। उनमें उ0 विलायत खाँ परम्परा के श्री महमूद नदीम, बनारस घराने के संजू सहाय तथा दिल्ली घराने के श्री सरवर साबरी मुख्य हैं। लन्दन स्थित भारतीय विद्या भवन में अनेक संगीतज्ञ, गुरु कार्यरत हैं, जो भारतीय संगीत के संरक्षण, प्रचार और देशी संगीत के विदेशी श्रोताओं के सम्वर्द्धन में महत्वपूर्ण भूमिका अपना रहे हैं। आगे हम भवन की गतिविधियों की चर्चा करेंगे।

भारतीय विद्या भवन की लन्दन शाखा

इस शाखा का शुभारम्भ सन् 1971 में हुआ। भवन की वर्तमान ईमारत एक पुराने चर्च का विस्तार है। भवन एक विशाल तीन मंजिले ईमारत में स्थित है। वहाँ प्रत्येक विषय की शिक्षा के लिए लगभग 20 कमरे हैं। इसके अतिरिक्त एक बड़ा हॉल और दो छोटे–छोटे हॉल कमरे हैं। बड़े हॉल के साथ एक विक्रय केन्द्र है, जिसमें संगीत की कुछ पुस्तकें, नृत्य और योगासन में उपयोग आने वाली वस्तुएं तथा भारत में निर्मित कुछ वस्तुएं बिक्री हेतु उपलब्ध हैं। उल्लेखनीय है कि भवन में 5 कमरों का एक अतिथि गृह भी है, जिसमें सभी आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध हैं। इनका उपयोग बाहर से आए अतिथियों के लिए किया जाता है। भारतीय विद्या भवन में उत्तर भारतीय और दक्षिण भारतीय दोनों पद्धतियों की संगीत शिक्षा की व्यवस्था है। भवन में मुख्य रूप से नृत्य, गायन, तबला, सितार तथा वायलिन की शिक्षा दी जाती है। यहाँ हिन्दी, संस्कृत, गुजराती, बंगाली आदि भाषाओं की शिक्षा की व्यवस्था है। इसके साथ–साथ योग और नाटक की शिक्षा दी जाती है। उल्लेखनीय है कि भारत रत्न पं0 रवि शंकर भवन के एक संरक्षक थे और एक हॉल में उनकी मूर्ति भी लगी हुई है।

अब हम यहाँ के संगीत शिक्षकों और शिक्षार्थियों की चर्चा करेंगे। यह बतला दें कि ये निम्न सभी शिक्षक भारत के विभिन्न प्रान्तों से आमन्त्रित किये गये हैं जो अपने–अपने क्षेत्र के विशेषज्ञ हैं–

1. श्रीमती शिवशक्ति श्रीनिवासन– दक्षिण भारतीय कण्ठ संगीत एवं वीणा वादन
2. गुरु श्री प्रकाश योदागुड़ी– भरतनाट्यम नृत्य
3. गुरु श्री बालाचन्द्रा– मृदंगम
4. गुरु बालू रघुरमन– कर्णाटक वायलिन
5. श्रीमती चन्द्रमा मिश्रा– उत्तर भारतीय कण्ठ संगीत
6. गुरु श्री राजकुमार मिश्रा– तबला
7. गुरु श्री संजय गुहा– सितार
8. गुरु श्री अभय शंकर मिश्रा– नटवरी नृत्य

लेखक को एक विश्वस्त सूत्र से भवन में संगीत के विद्यार्थियों की संख्या लगभग 700 ज्ञात हुई है, जो किसी भी संगीत विद्यालय के लिए गर्व की बात है।

ग्रीष्मकालीन संगीत की कक्षाएं (Summer School)

भवन में प्रत्येक वर्ष ग्रीष्मकाल में 3 सप्ताह के एक समर स्कूल की व्यवस्था की जाती है, जिसमें यूनाइटेड किंगडम और भारत से प्रतिष्ठित गुरुओं को शिक्षा हेतु आमन्त्रित किया जाता है। इसका मुख्य उद्देश्य छात्रों में छिपी हुई प्रतिभा को विकसित करना है तथा छात्र गुरुओं के सीधे सम्पर्क में आते हैं और अपनी शंकाओं का निवारण करते हैं जो नियमित बड़ी कक्षाओं में सम्भव नहीं है।

भारतीय विद्या भवन की वार्षिक गतिविधियाँ

भवन में लगभग पूरे वर्ष कुछ न कुछ उत्सव होते ही रहते हैं। जिनमें से कुछ मुख्य इस प्रकार हैं– प्रत्येक वर्ष जनवरी माह में 25 और 26 तिथि को संस्थापक दिवस उत्साह पूर्वक मनाया जाता है तथा उसी के निकट भारत का गणतन्त्र दिवस भी। भारत के कुछ मुख्य त्योहार जैसे होली, दीपावली, दुर्गापूजा, शिवरात्रि, वसन्त पंचमी तथा स्वतन्त्रता दिवस धूमधाम से मनाया जाता है। समय–समय पर भारत से प्रसिद्ध संगीतज्ञों को आमन्त्रित किया जाता है और उनका सार्वजनिक कार्यक्रम आयोजित होता है। इन गतिविधियों से भारतीय संगीत के प्रचार–प्रसार और श्रोताओं की बड़ी संख्या हो गई है।

देशी संगीत के विदेशी श्रोता और महर्षि महेश योगी

विश्व के अनेक देशों में भारतीय संगीत के विदेशी श्रोताओं की बढ़ोत्तरी में महर्षि महेश योगी के योगदान को सदा याद किया जाएगा। जबलपुर (मध्यप्रदेश) में जन्में और अपनी उच्च शिक्षा इलाहाबाद विश्वविद्यालय में पूर्ण करने वाले महर्षि महेश योगी एक उच्च कोटि के सन्त, योगी, आध्यात्मिक गुरु, श्रेष्ठ वक्ता, ध्यान की भावातीत पद्धति के जनक और देश–विदेश में भारत की छवि उजागर करने वाले तथा भारतीय संगीत के महान पोषक थे। आपने अपना कार्यक्षेत्र पश्चिम में बनाया और अपना मुख्यालय यूरोप (हॉलैण्ड) में रखा। आपके अनुयायी और ध्यान केन्द्र विश्व के कोने–कोने में फैले हुए हैं। उल्लेखनीय है कि महर्षि जी भारतीय शास्त्रीय संगीत को 'गन्धर्व वेद' के नाम से सम्बोधित किया करते थे। आपने विश्व में शान्ति का संदेश देने के लिए संगीत को माध्यम बनाया। आपने सम्भवतः 1987 में एक वृहत् योजना बनाई और विश्व के अनेक देशों में Gandharva Veda Concert for World Peace के बैनरतले संगीत के कार्यक्रम आयोजित कराए, जिसमें देश के सैकड़ों संगीतज्ञों ने भाग लिया। दो–दो, तीन–तीन संगीतज्ञों की टोली विश्वभर में भ्रमणकर कार्यक्रम दिया करती थी। इस

आयोजन में भाग लेने वाले कुछ कलाकारों के नाम इस प्रकार हैं– पं0 राजन मिश्र, पं0 साजन मिश्र, पवार बन्धु, गुंदेचा बन्धु, पं0 देबू चौधरी, उमा शंकर मिश्र, श्रीमती सुमित्रा गुहा, प्रो0 रूप कुमार सोनी, प्रो0 मुकुन्द भाले, श्री सतीश चन्द्र, पं0 शान्ताराम कशालकर, रेशमा श्रीवास्तव आदि। इन पंक्तियों के लेखक को भी अनेक बार भ्रमण करने व प्रदर्शन करने का दुर्लभ अवसर मिला है। यह योजना 1995 तक अपने चरम पर रही। इस प्रकार भारतीय संगीत के हज़ारों विदेशी श्रोता तैयार हो गए। महर्षि जी फरवरी 2008 में पंचतत्व में लीन हो गए। परन्तु अब भी महर्षि के मुख्यालय में वर्ष में कई बार देश के उच्चकोटि के संगीतज्ञों द्वारा संगीत के कार्यक्रम आयोजित होते हैं, जिसमें सैकड़ों विदेशी श्रोता सम्मिलित होते हैं। इस प्रकार देशी संगीत के विदेशी श्रोताओं की संख्या दिन–प्रतिदिन बढ़ती जा रही है।

सन्दर्भ :

1. भारतीय विद्या भवन की जानकारी भवन के तबला गुरु श्री राजकुमार मिश्र से प्राप्त हुई।
2. भारतीय सांस्कृतिक सम्बन्ध परिषद के बारे में सूचनाएं आगरा के संगीतज्ञ श्री केशव तलेगाँवकर से प्राप्त हुई है।